दक्षिण अफ्रीका में 'महात्मा' का उदय

आचार्य यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद

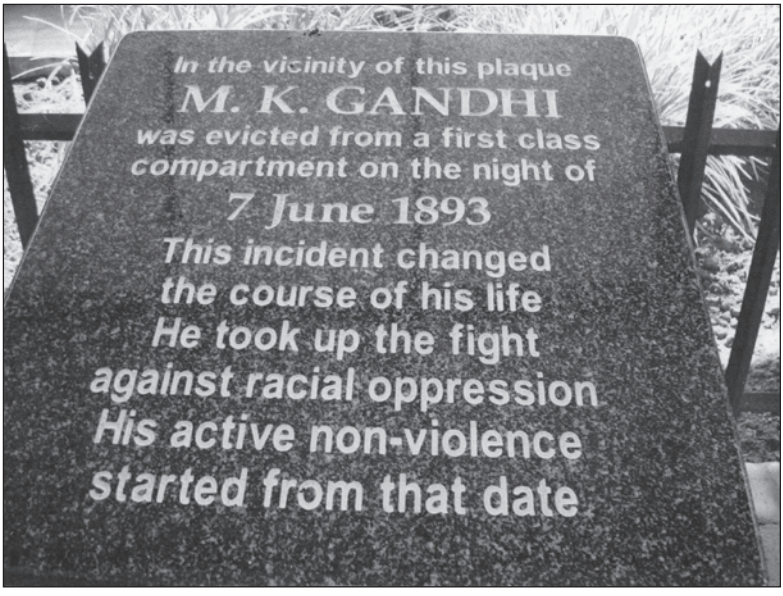

पीटर मार्टिजबर्ग रेलवे स्टेशन पर निर्मित शिला-फलक

एमेस्को

दक्षिण अफ्रीका में 'महात्मा' का उदय

मोहनदास करमचंद गाँधी 'महात्मा गाँधी' कैसे बने? उन दिनों कई प्रतिभाशाली छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त करने लंदन जाते थे और वरिष्ठ श्रेणी की नौकरियाँ कर आराम से जीवन बिताते थे। लेकिन गाँधीजी ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने का निर्णय क्यों लिया? गाँधीजी की जीवन-शैली और उनके दृष्टिकोण में इस महान परिवर्तन के कारण क्या हैं?

ये सारी बातें बडी आसक्तिदायक होती हैं। कई बातों को लेकर इन दिनों में भी गाँधीजी की नीति की निंदा करने वालों की संख्या कम नहीं है, लेकिन यह तो स्पष्ट है कि उन दिनों में मोहनदास करमचंद गाँधी जैसे साधारण व्यक्ति ने ऐसे साहसपूर्ण निर्णय को लेकर अपने जीवन को मानव-जाति के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया, जो दूसरे लोगों द्वारा संभव नहीं है। इसी कारण से वे 'महात्मा' बने थे। उन दिनों सामाजिक स्थितियों में जो बदलाव हुए थे और अपने निजी जीवन में जो अनुभव गाँधीजी को संप्राप्त हुए, उनकी भूमिका गाँधी को 'महात्मा' बनाने में निर्णायक सिद्ध हुई है। गाँधीजी ने अननुकूल स्थितियों और चुनौतियों का डटकर सामना किया, कई बार अपमानित हुए और उन पर कई हमले हुए। लेकिन उनके संकल्प अविकल्प रहे, समस्याओं का डटकर सामने करने के संदर्भ में गाँधीजी ने कभी अपनी पीठ नहीं दिखायी। गाँधीजी ने कभी सुखमय जीवन बिताने को प्राथमिकता नहीं दी। यदि वे चाहते तो उनकी शैक्षिक योग्यताओं और प्रतिभा के कारण वे अच्छी नौकरी प्राप्त कर सकते थे और बड़ी आसानी से वे सुखमय जीवन बिता सकते थे। यदि ऐसा होता तो हमें दास्यश्रृंखलाओं से मुक्ति दिलाने वाले 'महात्मा' नहीं मिलते और इतिहास के पृष्ठों में मोहनदास करमचंद गाँधी जैसे साधारण व्यक्ति को स्थान नहीं मिलता ।

गाँधीजी के व्यक्तित्व की विशिष्टता से अवगत होने केलिए दक्षिण अफ्रीका में उनके जीवन के बारे में जानना अत्यंत आवश्यक है, जिसने उनके लक्ष्य निर्धारित किए